IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शीर्षक- 'भूमंडलीकरण और इक्कीसवीं सदी के हिंदी व्यंग्य निबंध

Sanjeev Bhoria

जिसे हम भूमंडलीकरण कहते हैं, वह वैश्वीकरण का पर्यायवाची शब्द है इसे अंग्रेजी में 'ग्लोबलाइजेशन' कहा जाता है। भूमंडलीकरण शब्द का अर्थ है 'भू' अर्थात भूमि और 'मंडली' का अर्थ है समाहित करना।

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दौर में भूमंडलीकरण ने अपना विस्तार करना शुरू किया था परंतु आज इक्कीसवीं सदी में यह अपने उच्चतम स्तर पर पहुंच चुका है। वस्तुतः भूमंडलीकरण का संबंध 'अर्थतंत्र'से जुड़ा हुआ है आज समूचा विश्व अर्थ को केंद्र में रखकर आगे बढ़ रहा है। अर्थतंत्र के बढ़ते प्रभाव से बाजारवाद का एक मायाजाल प्रत्येक मनुष्य के मन और मस्तिष्क पर छा गया है।

वास्तव में अर्थतंत्र का फैलता यह मायाजाल हमारे समाज व संस्कृति पर दुष्प्रभाव डाल रहा है। आज प्रत्येक व्यक्ति इसकी चपेट में हैं जिससे बाहर निकल पाना बेहद मुश्किल लग रहा है । सन 1990 के दशक में उपजा यह ग्लोबलाइजेशन आज इक्कीसवीं सदी में विकराल रूप धारण कर चुका है डॉ० प्रकाश कृष्णदेव के शब्दों में- "भूमंडलीकरण व्यापार विषयक नियमों की वैश्विक एकता के लिए लायी गई प्रक्रिया है जो विश्व के लोगों, कंपनियों तथा विविध राष्ट्र की सरकारों को एक ही व्यापार विषयक नियमावली में बांधने का कार्य करती है। कुल मिलाकर उत्पाद, विचार दृष्टिकोण तथा अन्य सांस्कृतिक आयामों का यह एक साझा मंच है। यह आर्थिक परिवेश का अंतरराष्ट्रीय संजाल है । राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में एकीकरण भूमंडलीकरण या वैश्वीकरण कहा जाता है।

अतएव भूमंडलीकरण विविध राष्ट्र के लोगों, कंपनियों तथा सरकारों के एकत्रीकरण की प्रक्रिया है ऐसी प्रक्रिया है जो अंतरराष्ट्रीय व्यापार तथा निवेश द्वारा चलाई जाती है और सूचना प्रौद्योगिकी से पोषित होती है। भूमंडलीकरण मूलतः नव उपनिवेशवाद और बाजारवाद का बढ़ता हुआ एक मायाजाल है जो व्यापार के माध्यम से हमारी जीवन शैली, संस्कृति, भाषा, रहन- सहन इत्यादि सब पर अपना प्रभाव कायम करता जा रहा है|

भूमंडलीकरण को अपसंस्कृति कहते हुए डॉ० पुष्प लाल सिंह ने लिखा है "भारत के परिप्रेक्ष्य में इस (भूमंडलीकरण) अपसंस्कृति ने विशेषत: हमें किस प्रकार प्रभावित किया है इसका संक्षिप्त आकलन निम्नलिखित शीर्षकों में किया जा सकता है- उपभोक्तावाद तथा ब्रांडेड संस्कृति, मीडिया जगत इंटरनेट तथा गूगल, विज्ञापन का मायावी जाल, अश्लीलता और नई नैतिकताएं, भ्रष्टाचार तथा अपराध जगत इत्यादि।

इस प्रकार वैश्वीकरण का यह समय सांस्कृतिक नैतिकता और मूल्यों के बिखरते तथा टूटते हुए ह्रास और विद्रूपता का समय है। आज बाजारवाद हमारी संस्कृति का गला घोट रहा है। हमारे रिश्ते टूट रहे हैं रिश्तो की आत्मीयता टूट रही है। भूमंडलीकरण के इस बदलते परिवेश को इक्कीसवीं सदी के हिंदी व्यंग्यकारों ने बखूबी पहचाना और अपने व्यंग्य द्वारा कड़े प्रहार करने शुरू कर दिए। व्यंग्य दरअसल कथन की एक अनोखी शैली है या यूं कहें की बात कहने का अनोखा अंदाज है।व्यंग्य साहित्य की एक विधा है जिसमें उपहास, मज़ाक (लुत्फ) और इसी क्रम में आलोचना का प्रभाव रहता है। व्यंग्य को मुहावरे मे व्यंग्यबाण कहा गया है। व्यंग्य समाज में उपजी कुरीतियों और कुसंस्कारों का पर्दाफाश कर उसे सुधारने का कार्य करता है। कबीर से लेकर भारतेंदु, निराला, नागार्जुन हरिशंकर परसाई, शरद जोशी तक होते हुए आज इक्कीसवीं सदी में अनेकों व्यंग्यकारों द्वारा समाज में फैली अराजकता, मूल्यहीनता और फूहड़ता पर करारा प्रहार किया जा रहा है। हिंदी के सुप्रसिद्ध और कालजयी व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई व्यंग्य के संदर्भ में कहा करते थे कि "व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों, अत्याचारों, मिथ्याचारों और पाखंडों का पर्दाफाश करता है।"

इक्कीसवीं सदी के प्रखर व्यंग्यकार राजेश जोशी ने वैश्वीकरण के इस बढ़ते हुए प्रभाव पर व्यंग्य करते हुए लिखा है- "कम हो रहा है मिलना जुलना। कम हो रही है लोगों की जान पहचान। सुख दुख में भी पहले की तरह इकट्ठे नहीं होते लोग। फोन पर आ जाते हैं शोक संदेश। फोन पर ही संवेदना प्रकट करके काम चल जाता है।"

आज भूमंडलीकरण के परिणामस्वरुप मनुष्य नैतिकता और आदर्श इत्यादि को त्याग कर खुलेआम बेशर्ममेव जयते का नारा देकर विज्ञान और टेक्नोलॉजी के सहारे चल रहा है। इक्कीसवीं इसी सदी चूँकि संचार और सूचना क्रांति का युग है। इंटरनेट ने आज विश्व को एक अलग तरह की जीवन पद्धति में तब्दील कर दिया है। सब कुछ इंटरनेट में सिमटकर रह गया है। छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी वस्तु तथा जानकारी बटन दबाते ही हमारे सामने प्रस्तुत हो जाती है। सच्चाई तो यह है कि इंटरनेट ने लोगों को सुविधा तो दी है लेकिन उसे आलसी भी बना दिया है। 'मोची भया उदास' व्यंग्य में प्रेम जनमेजय ने भूमंडलीकरण के इस बढ़ते दुष्प्रभाव पर लिखा है-

"आप तो जानते हैं कि यह कालोनी नयी है। और हम भी नए हैं। मुझे यहां के शॉप्स की ज्यादा जानकारी नहीं है गूगल सर्च मैं देख रहा हूं आसपास जूतों का शोरूम हो तो वहां से नयी चप्पल ले आना।"

"तुम कोई मोची ढूंढ लो मैं उसके पास चला जाऊंगा।"

"गूगल सर्च पर मोची नहीं मिलेगा। मिला तो इस एरिए का नहीं होगा। लगता है मेरी कॉल आ रही है। अभी मेरे पास टाइम नहीं है। ऐसा करता हूं शाम को सर्च करता हूँ। और हो सकता है ऑनलाइन डील मिल जाए।"

हाल ही में वैश्वीकरण के प्रभाव के चलते कुछ वर्षों में पाश्चात्य जीवन शैली और रहन-सहन ने हमारे व्यवहार को बुरी तरह प्रभावित किया है। हम इतने बोल्ड हो गए हैं कि अश्लीलता और फूहड़पन को प्रगति मानकर उस पर आगे बढ़ते जा रहे हैं। व्यंग्यकार ओखदे ने 'ये फ़ेसबुक के महारथी' नामक व्यंग्य में आज की इस स्थिति पर कुछ इस प्रकार व्यंग्य किया है-

बेटा माँ से कहता है, मॉम, यू आर लूकिंग सो हॉट। भाई बहन से कहता है, सिस क्या बात है बड़ी सेक्सी लग रही हो।"

इक्कीसवीं सदी अमेरिकावाद का बढ़ता दौर है। अमरीका महाजनी सभ्यता ने न केवल उत्पाद बनाए वरन उसके लिए बाजार भी तैयार करता रहा है। इस स्थिति पर व्यंग्य करते हुए व्यंग्यकार अरविंद विद्रोही लिखते हैं-

"इन दिनों बहुराष्ट्रीय कंपनियों की गिद्ध दृष्टि भारत पर लगी हुई है। वे यहाँ सौंदर्य प्रतियोगिता कराकर। यहाँ की सुंदरियों से सौंदर्य प्रसाधन बनवाने का काम कर रहे हैं।"

इतना ही नहीं 'स्वाइन फ्लू का ग्लोबलाइजेशन' नामक व्यंग्य लेख में इससे भी आगे बढ़कर बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं- "यह अपने लिए जब नया बाजार खोजता है तब सबसे पहले इनका ध्यान गरीब देशों की ओर जाता है सबसे पहले यह स्वाइनफ्लू का वायरस उड़ाकर उस रोग का निदान बताते हुए अपना बाजार तैयार करते हैं। अपना माल बेचकर अकूल धन कमाते हैं।"

संदर्भ ग्रंथ-

1.भूमंडलीकरण विचार नीतियां और विकल्प, कमलनयन काबरा, पृष्ठ 140
2. भूमंडलीकरण बनाम वासुदेव कुटुंब, सरोज प्रभा वर्मा।
3. वैश्वीकरण समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, नरेश भार्गव , पृष्ठ 15-19
4. भूमंडलीकरण एवं भारत, पुष्पेश पंत
5. पत्रिका- व्यंग्य यात्रा, त्रैमासिक, संपादक , प्रेम जनमेजय
6. https://hi.hm.wikipepdiaorg.in